**डॉ०शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी०एम०जे०कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो०न० 9546743796**

**Email-** **mishrasm966@gmail.com**

**B.A. |||**

 **काव्यक लक्षण**

 **काव्य सार्वकालिक आ सार्वदेशिक वस्तु थिक । एकर स्वरूप जीवनक सदृश बहुआयामी अछि । मानवीय भाव सभक पर्यालोचन एवं साधारणीकरण काव्यक माध्यम सँ होइत अछि । अतएव काव्य लक्षणक सीमामे आबद्ध नहि कएल जा सकैत अछि , किएक त काव्य आत्माक अनुभूतिक व्यक्त रूप थिक । वास्तव मे काव्य हृदयगत अछि । अतएव सूक्ष्म अछि । ओ ब्रह्माक सदृश वाणीगम्य नहि भए केँ अन्तःकरणगम्य अछि-**

 **" न शक्यते वर्णयितूं गिरा तदा ।**

 **स्वयं तदंत करणेन गुह्यते ।। "**

 **तथापि काव्यशास्त्री लोकनि अपन अपन ढंग सँ काव्यक मीमांसा कएलनि अछि । विद्याधर काव्यक व्युत्पत्ति करैत कहलनि अछि " कवयतीति इति कवि: तस्य कर्म काव्यम । " अर्थात काव्य सृजन करए वला केँ कवि कहल जाइत अछि आ कवि कर्म केँ काव्य । आचार्य राजशेखर कवि व्यापार केँ दृष्टि मे राखि काव्यक व्युत्पत्ति एहि रूपसँ कएलनि अछि - " कवि शब्दस्य कष्ट** वर्णं इत्यस्य धातोः | काव्य कर्मणो रूपम् |” अर्थात् कवि शब्दक व्युत्पत्ति ‘ कष्ट ‘ धातु **सँ अछि , जकर अर्थ अछि काव्य कर्म | मेदिनीकोश मे काव्य शब्दक अर्थ कविक ‘ कृति ‘ कहल गेल अछि – “ कवेरिदंकार्यं – भावो वा | “**

 **काव्यक अनेक लक्षण अनेक काव्यशास्त्री लोकनि द्वारा देल गेल अछि | एहि क्रममे देखल अछि जे काव्यक सभ सँ प्राचीन लक्षण अग्निपुराण मे देल गेल अछि -**

 **“ संक्षेपाद्वाक्य भिष्टार्थ व्ययच्छिन्ना पदावली |**

 **काव्यंस्फुरदलंकारं गुण व दोष वर्जितम ||**

**अर्थात संक्षेपमे इष्ट अर्थ कें प्रकट करएबला पदावली सं युक्त एहन वाक्य कें काव्य कहल जाइत अछि जाहिमे अलंकार प्रकट हो आ जे दोष रहित आ गुणयुक्त हो | एहि परिभाषा मे पांच बात अछि - इष्टार्थ, संक्षिप्त वाक्य , अलंकार , गुण आ दोष | एकर विवेचन कएला सं ज्ञात होइत अछि जे एहि परिभाषाक द्वारा काव्य कें वाह्य सीमामे बान्ह्बाक सफल प्रयास कएल गेल अछि , मुदा ओकर मुख्य प्रभावकारी स्वरूप स्पष्ट नहि भए पबैत अछि |**

**भामह्क कथन छनि जे शब्द आ अर्थक संयोग काव्य थिक – “ शब्दार्थो सहितो काव्यम | “ शब्दार्थक साहित्य सं भामहक तात्पर्य शब्द आ अर्थक काव्यात्मक वैशिष्ट्य सं अछि | शब्द आ अर्थक विशिष्टता अर्थचारुता अछि |**

 **भामह्क ई परिभाषा अत्यंत व्यापक अछि | एकर कारण ई अछि जे एकर क्षेत्र मे काव्यक अतिरिक्त शास्त्र , इतिहास आ वार्तालाप आदि आबि जाइत अछि | मुदा भामह्क उपर्युक्त परिभाषा सं काव्यक स्वरुपक स्पष्टीकरण नहि भए पबैत अछि |**

**दंडी काव्यक परिभाषा भिन्न रूप सं देलनि अछि | हुनक मत छनि जे इष्ट अर्थ सं विभूषित पदावली काव्य शरीर अछि – “ शरीरं तावदिष्टार्थमवच्छिन्न पदावली | “**

**इएह मान्यता ध्वन्यालोककार आनंदवर्दद्धनक छनि | हुनक कथन छनि – “ शब्दार्थ शरीरं ताबतकाव्यम | “काव्य त शब्दार्थ शरीरबला अछि | एकर आत्मा वा वास्तविक तत्व किछु आरो अछिविकास भेल | एकर फलस्वरूप काव्यक आत्मा अलंकार , रीति , ध्वनि आदिक आधार पर काव्यक लक्षणक प्रतिपादन कएल गेल | मुदा काव्यक आत्माक माध्यम सं सेहो काव्यक समीचीन लक्षण कहब कठिन अछि , किएक त काव्यक आत्माक सम्बन्धमे सेहो अत्यधिक वैषम्य अछि | तथापि एहि आधार पर परवर्त्ती संस्कृतक आचार्य सभमे भोजराज , न्यायवागिश , वाग्भट्ट , विद्याधर , अच्युतराय , धर्मसुरि आदि आचार्य लोकनि काव्य कें निर्दुष्ट , गुणान्वित , अलंकृत एवं रसात्मक स्वीकार कएलनि अछि |**

**रुद्र्ट भामहक परिभाषा कें स्वीकार करैत कहैत छथि – “ ननु शब्दार्थो काव्यम | “ एहि परम्परा समुद्रबंध कहलनि जे “ इह विशिष्ट शब्दार्थो काव्यम | “ अर्थात कतिपय विशिष्टता सभसँ युक्त शब्दार्थे काव्य थिक | कुंतक भामह्क वक्रोक्त – अभिधानकें वक्रोक्ति सिद्धांतक रुपमे स्थापित करैत काव्यक परिभाषा दैत छथि – “ शब्दार्थो सहितौ वक्र कवि व्यापार शालिनी | बन्धे व्यवस्थितौ काव्यम | “**

**ओ वक्र व्यापारशाली शब्दार्थ कें आ व्यवस्थित शब्दार्थ कें काव्य कहलनि अछि | मुदा हुनक परिभाषा मे वक्रता आ बन्धक विश्लेषण नहि कएल गेल अछि | अतएव परिभाषामे अस्पष्टताक भान होइत अछि | एकर अतिरिक्त हुनक परिभाषाक क्षेत्र सेहो सीमित भए जाइत अछि | ( क्रमशः )**